Dr. RANJEET KUMAR
Deptt. of History
H. D. Jain College, Ara.

Notes For.- M.A. Sem-I, CC-3, unit-III.

Topic- शंकराचार्य (Shankaracharya.):- 788-820 ई.

केरल के कालिंदी में जन्मे

शंकराचार्य को एक महान भारतीय दार्शनिक तथा विचारक माना जाता है। शंकर के दर्शन को अद्वैतवाद अर्थात् द्वैतवाद का विरोधी सिद्धान्त कहा गया है। उनके अनुसार ईश्वर तथा निर्मित संसार एक है। दोनों के बीच भेद भ्रम है; वास्तविक नहीं तथा यह भेद अज्ञानता के कारण दिखाई देता है, मुक्ति का रास्ता ईश्वर की भक्ति/पूजा है। जिसे ज्ञान द्वारा प्राप्त किया जाता है। यह ज्ञान है- ईश्वर तथा उसके द्वारा निर्मित मानव तथा वह एक ही है। यही दर्शन वेदान्त कहलाया। इस प्रकार, शंकराचार्य ने वेदों से भी ऊपर उठ कर (जिन्हें सच्चे ज्ञान का आधार कहा जाता है) ज्ञान की विस्तृत व्याख्या की।

उनके सभी दार्शनिक विचारों को उनके कार्य से अभिव्यक्त किया गया है, जिनका गठन उनकी चर्चाओं जिन्हें उपनिषदों पर भाष्य तथा ब्रह्मसूत्र तथा भागवतगीता पर की गई टिप्पणियों से किया गया है।

वे हिन्दूवाद के गरूण कहलाए।

जैसा कि उन्होंने उपनिषदों की विरोधाभावी व्याख्याओं/टिप्पणियों को एक संयुक्त व्यवस्था में ढाल दिया। शंकराचार्य को आज भी ज्ञानमार्ग के संस्थापक के रूप में जाना जाता है; तथा याद भी किया जाता है। बुद्धिमता का रास्ता/पथ तीन रास्तों से होकर जाता है, ये रास्ते जबकि

⟶

→ परस्पर विरोधी है, लेकिन मुक्ति का मार्ग है। ये मार्ग है- भक्ति मार्ग एवं कर्म मार्ग। वे मानते थे कि आत्मा निर्गुण ब्राह्मण के समरूप है। इस संसार में, मानव के कष्ट इस तथ्य से पैदा होते हैं कि वह इनको पहचानने में असफल हो जाता है तथा यह अज्ञान अर्थात् अविद्या तथा माया के कारण होता है। अतः यह केवल विद्या या ज्ञान जो अज्ञानता का पर्दा हटाता है, तथा जो कि मानव को ब्रह्म से मिलाते हैं, तथा उसे ब्रह्म से आत्मसात कराता है।

शंकराचार्य के अनुसार यह आत्मसात् ही है, जो मुक्ति का निर्माण करता है, तथा वह इसका सार उपनिषेदिक पंक्तियां- तत्-वम-असी से निकालते हैं। उनकी मृत्यु के पश्चात्, चार मठ - श्रीगिरि/शृंगेरी (कर्नाटक), द्वारका (गुजरात), पुरी (उड़ीसा) तथा बद्रीनाथ में स्थापित किए गए।